नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती

जीवन-परिचय : नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती चामुण्डराय के गुरु थे जिसने श्रवणबेलगोला की विश्वविख्यात प्रतिमा बाहुबली का निर्माण किया था। नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती मूलसंघ देशीयगण के विद्वान अभयनन्दि के शिष्य थे। अभयनन्दि उस समय के बड़े सैद्धान्तिक विद्वान थे। उनके शिष्य वीरनन्दि और इन्द्रनन्दि थे। ये दोनों नेमिचन्द्र के ज्येष्ठ गुरुभाई थे। नेमिचन्द्र ने अपने विद्यागुरु कनकनन्दि का भी उल्लेख किया है।

नेमिचन्द्र आचार्य अत्यन्त प्रभावशाली और सिद्धान्तशास्त्र के मर्मज्ञ विद्वान थे। आपने स्वयं गोम्मटसार की गाथा 397 में लिखा है कि—

जिस प्रकार चक्रवर्ती अपने चक्ररत्न से भारतवर्ष के छह खंडों को बिना किसी विघ्न बाधा के अपने अधीन करता है, उसी तरह मैंने (नेमिचन्द्र ने) अपनी बुद्धि-रूपी चक्र से षट्खंडागम-सिद्धान्त को सम्यक्रीति से अपने अधीन किया है।

आचार्य नेमिचन्द्र को सिद्धान्तचक्रवर्ती की उपाधि दी गयी थी, सिद्धान्तग्रन्थों के अभ्यासी को सिद्धान्तचक्रवर्ती का पद प्राचीन समय से ही दिया जाता रहा है। सिद्धान्तग्रन्थों के अधिकारी विद्वान होने के कारण आचार्य नेमिचन्द्र ने धवला सिद्धान्त का मन्थन कर गोम्मटसार और जयधवला टीका का मन्थन कर लब्धिसार ग्रन्थ की रचना की है।

आचार्य नेमिचन्द्र का सुनिश्चित समय विक्रम की 11वीं शताब्दी है।

रचना-परिचय : आचार्य नेमिचन्द्र की निम्नलिखित रचनाएँ प्रसिद्ध हैं—

1. **गोम्मटसार :** यह एक सैद्धान्तिक ग्रन्थ है। यह दो भागों में विभक्त है—जीवकांड और कर्मकांड। जीवकांड में 734 गाथाएँ हैं और कर्मकांड में 962 गाथाएँ हैं। इस ग्रन्थ पर दो संस्कृत-टीकाएँ भी लिखी गयी हैं।

2. **त्रिलोकसार :** इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ में 1018 गाथाएँ हैं। यह करणानुयोग

का प्रसिद्ध ग्रन्थ है। इसका आधार 'तिलोयपण्णत्ती' और 'तत्त्वार्थवार्तिक' है। इसमें तीन लोक के स्वरूप का विस्तार से वर्णन है।

3. **लब्धिसार :** लब्धिसार में तीन अधिकार और 649 गाथाएँ हैं। इनमें बतलाया गया है कि कर्मों को काटकर जीव कैसे मुक्ति प्राप्त कर सकता है। अथवा अपने शुद्ध स्वरूप में स्थित हो सकता है। इसका प्रधान आधार कषायपाहुड और उसकी जयधवला टीका है।

4. **क्षपणासार :** क्षपणासार में 653 गाथाएँ हैं। इनमें कर्मों को क्षय करने की विधि का निरूपण किया गया है।